

Vgl. अनुवक्तव्य, अनुवचन, अनुवाक, अनुवाक्या fg., अनूक्त fg., अनुचान, 1. अनुच्य. — caus. 1) Jmd die Formel oder Einladung für — aussprechen lassen KĀTJ. ÇR. 4, 4, 15. अग्रये 5, 2, 1. यूपाय 6, 3, 1. वायवे 9, 9, 14. mit gen. der Sache wozu 6. — 2) einladen lassen auf, — zu Etwas (dat.): स्तेकिभ्यः KĀTJ. ÇR. 6, 6, 18. सोमाय 7, 9, 15. 8, 4, 1. 26, 6, 21. — 3) lesen ÇĀK. 17, 4. 90, 18. VIKR. 26, 3. MĀLAV. 8, 13. KĀTHĀS. 74, 273. 76, 22. — Vgl. अनुवाचन. — desid. med. zu lernen sich anschicken ÇAT. Br. 4, 6, 2, 2.

— अभ्यु in Hinblick auf —, in Beziehung auf —, über Etwas sagen, Etwas mit Worten bezeichnen: तदेतदपि: पश्यन्मभ्युवाच AIT. Br. 2, 33. 3, 12. 20. 8, 6. यो देवतामृगभ्युक्ता ÇAT. Br. 6, 3, 1, 2. प्रनूनेवैतद्भ्युक्तम् 1, 4, 1, 9. 2, 4. 3, 3, 10. 7, 4, 4. 2, 3, 3, 6. 5, 1, 4. 5. 3, 4, 2, 7. 4, 1, 3, 17. 5, 3, 3. 6, 1, 10. इति संप्रति दिशा ऽभ्युच्यते 8, 1, 4, 2. 13, 5, 4, 5. KHĀND. UP. 3, 12, 5. — अय स. अयवक्त्र, अयवाचन.

— अभि 1) = अभ्युवच; nur das partic. अभ्युक्त zu belegen. तदेष्ट श्लोकौ ऽभ्युक्तः ÇAT. Br. 7, 5, 1, 21. 2, 52. 8, 6, 2, 19. यज्ञषाभ्युक्तम् 10, 2, 6, 19. ऋषिणा 1, 4, 10. ऋचा 14, 7, 2, 28. MUNJ. UP. 3, 2, 10. WEBER, RĀMAT. UP. 357. श्लोकान् KAUSH. UP. 1, 6. क्त्रिण्यपीति वा अभ्युक्ता ÇAT. Br. 6, 3, 1, 42. — 2) Etwas zu Jmd sagen, mit dopp. acc.: इदं तु त्वां कुरुराजो ऽभ्युवाच MBH. 2, 1998. 3, 560. 8709. 7, 4230. R. GORR. 2, 31, 8. इति रामो ऽभ्युवाच तान् 1, 31, 15. MBH. 4, 1662. 8, 3530. BHĀG. P. 4, 17, 9. Jmd für Etwas erklären: भूतं भव्यं भविष्यं च मार्काण्डेयो ऽभ्युवाच ह । यज्ञं त्वां चैव यज्ञानां तपश्च तपसामपि ॥ (so die ed. Bomb.) MBH. 6, 3039.

— आ Jmd anreden, Jmd zurufen: आ वां वाचे विद्वेष्यु प्रयस्वान् RV. 7, 73, 2. इन्द्राय ब्रह्माण्योक्तौ 1, 63, 9. ÇĀKH. Br. 7, 4.

— उद् s. उद्वाचन.

— उप zusprechen, ermuntern, antreiben: यत्रमस्यत्तं उपवाचत् भृगवः RV. 1, 127, 7. उप यदेवै च ध्रुस्यं हेतोः 5, 49, 4. तनूपासं परिपासं कृण्वाना यदुपोचिरे AV. 5, 8, 6. — Vgl. उपवक्त्र, उपवाक fgg.

— नि 1) reden, sprechen: न्यवेचत् BHĀG. P. 3, 17, 29. — 2) schmähen: दुर्वोधनं नैकृतिकं न्यवेचत् MBH. 9, 3320. — Vgl. निवचन, निवाक्. — caus. schmähen VJUTP. 73.

— निस् 1) aussprechen, mit Worten bezeichnen, ausdrücklich nennen, erklären: यत्प्रथमे पदे देवता निरुच्यते AIT. Br. 4, 29. अनिरुक्ता देवतां निरुवेचत् ÇAT. Br. 10, 3, 5, 15. NIR. 10, 5. तस्मात्सत्यं निरुच्यताम् MBH. 3, 16892. नामधेयानि लोकिषु बहून्व्यस्य यथार्थवत् । निरुच्यते मरुत्वाच्च विभुत्वाच्च कर्मणास्तथा ॥ 7, 9611. 13, 7523. 12, 236. ऋणु पुत्र यथा श्लेष पुरुषः शाश्वतोऽव्ययः । अन्नयश्चाप्रमेयश्च सर्वगश्च निरुच्यते ॥ 13740. यादवा यदुना चाप्रे निरुच्यते चक्रेऋषाः HARIV. 1898. वेदा निर्वक्तुमत्तमाः PAÑĀR. 1, 12, 38. (यः) निरुच्यमान प्रश्नं नेच्छेत् (der) eine an ihn gerichtete Frage nicht beantworten will M. 8, 55. विदिज्ञाने निरुच्यते die Wurzel विद् wird durch ज्ञान erklärt KĀM. NIRIS. 2, 17. Verz. d. Oxf. H. 4, a, No. 30. मासात्तु मेदसो जन्म मेदसो ऽस्थि निरुच्यते die Knochen werden vom Fette abgeleitet HARIV. 2179. निरुक्त ausgesprochen, in Worte gefasst, erklärt; deutlich gesprochen (Gegens. उपांशु): निरुक्तमेनः कनीयो भवति ÇAT. Br. 2, 5, 2, 20. अनिरुक्तः प्रजापतिः 14, 2, 2, 21. TAĪTT. UP. 2, 6, 7. अयमेव स्वार्थो भगवत्या विष्णुभक्त्या स्वामिनो निरुक्तः PRAB. 104, 18. BHĀG. P. 5, 12, 9. 19, 20. 6, 4, 28. fg. नान्यत्तदस्त्यपि मनोवचसा

निरुक्तम् 7, 9, 48. 8, 3, 26. अतौहिणी तु पर्यायैर्निरुक्ता च वदथिनी MBH. 5, 5267. BHĀG. P. 7, 14, 34. यन्निरुक्तं निधनुषेयुः PAÑĀV. Br. 17, 1, 8. 18, 6, 9. निरुक्त एन्द्र उपांशु प्रजापत्यः ÇĀKH. ÇR. 17, 7, 9. ÇAT. Br. 1, 4, 4, 2. 4, 1, 3, 16. 14, 1, 2, 18. या पञ्चमी तां निरुक्तानिरुक्तामिव गयेत् SHADY. Br. 2, 2. PAÑĀV. Br. 7, 1, 8. KHĀND. UP. 1, 13, 3. 2, 22, 1. von Versen, welche die Götternamen ausdrücklich enthalten: निरुक्तं वैश्वानरं यजति ÇĀKH. Br. 19, 4. LĀTJ. 1, 4, 5. अग्नेत्यावनिरुक्ते Verse an Agni, in welchen aber sein Name nicht vorkommt, ĀÇV. ÇR. 2, 14, 32. ausdrücklich genannt, — vorgeschrieben GRBJ. 1, 22, 27. तदिदं वचनं तेषां निरुक्तं वै ist erklärt so v. a. hat sich bewährt, ist in Erfüllung gegangen MBH. 9, 1316. — 2) wegsprechen, durch Worte vertreiben: श्रुत्यान्निरुवाचमहं विषम् AV. 4, 6, 4. यक्ष्ममेङ्गभ्यः 5, 30, 8. 16. 9, 8, 10. — Vgl. निरुक्त (in der Bed. 2.: निरुक्तमस्य यो वेद Verz. d. Oxf. H. 50, a, 18. सनिरुक्ता स्वसं- क्तिताम् BHĀG. P. 12, 6, 58), निरुक्ति, निर्वक्तव्य fg., निर्वचनीय, निर्वक्ता, निर्वक्त्र.

— परा widersprechen, zurückweisen (Gegens. अनु) ÇAT. Br. 1, 4, 4, 5, 12. — Vgl. परावाक, पराद्य.

— परि besprechen (mit einem Spruche): ब्राह्मणोऽनुवृत्तासि AV. 4, 19, 2.

— प्र 1) verkünden, melden, mittheilen, aufführen, erwähnen; preisen; Jmd (dat. gen.) Etwas ankünden, lehren, praecipere: सनिमग्ने देवेषु प्र वाचः RV. 1, 27, 4. 6, 13, 10. AV. 7, 78, 2. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वाचम् RV. 1, 32, 1. 167, 7. अग्निर्मह्यं प्रेडुं वेचन्मनीषाम् 4, 3, 3. प्र सा वाचि सुष्ठुतिः 7, 58, 6. प्र नो वाचो ऽनागसो अयम्पो 62, 2. 70, 1. 86, 4. प्र नु वाचं चिकित्से जनाय मा गामनागामादिंति वधिष्ठ 8, 90, 15. 10, 113, 9. 139, 6. गुह्यानि नामाविष्करोति बार्हृषिं प्रवाचं 9, 93, 2. AV. 2, 1, 2. AIT. Br. 6, 34. तस्मा एतं राजसूयं यज्ञक्रतुं प्रवाच 7, 15. सूक्तम् NIR. 10, 32. वेदान् ÇAT. Br. 3, 2, 4, 5. 6, 3, 3, 12. 10, 4, 2, 1. KĀTJ. ÇR. 4, 2, 19. तस्मै ह्रापोच्यैव प्रवासां चक्रे KHĀND. UP. 4, 10, 2. 8, 8, 4. M. 2, 89. 3, 22. 124. 266. 5, 57. 7, 36. 8, 266. 9, 56. BHĀG. 4, 1, 8, 11. MBH. 1, 6148. HARIV. 9622. R. GORR. 1, 4, 75. 5, 84, 4. 88, 8. VARĀH. BRH. S. 1, 11. 11, 53. 23, 1. 41, 1. 43, 11. 43, 1. 46, 1. 54, 62. KĀTHĀS. 1, 60. BHĀG. P. 1, 2, 1. 4, 1, 12. ब्रह्म सनातनम् । नारदाय वाचत्तम् (acc. partic.) 6, 37. MĀRK. P. 54, 8. BRAHMA-P. in LA. (III) 49, 6. PAÑĀR. 1, 1, 23. आत्मचरितवृत्तात् परस्परं प्रोचतुः PAÑĀT. 116, 1. ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह praecceptorum TAĪTT. UP. 1, 8. नैव तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं वेष एव च lässt sich nicht mittheilen, — beschreiben MBH. 10, 222. अथ बार्हृस्पतः श्रीमान्युक्तः पुष्येण (so ist zu lesen) प्रोच्यते ब्राह्मणैः R. 2, 26, 9 (11 GORR.). H. 19. प्रोक्त verkündet, mitgetheilt, gelehrt, aufgeführt, erwähnt M. 2, 68. 5, 110. 7, 98. 12, 126. P. 4, 2, 64. 3, 101. Einl. i. VARĀH. BRH. S. 43, 1. BHĀG. P. 2, 9, 43. 8, 13, 37. (अयं पशुधर्मः) मनुष्याणामपि प्रोक्ता वेणो राख्यं प्रशासति wird auch bei den Menschen erwähnt, soll auch bei den Menschen stattgefunden haben M. 9, 66. याः कर्दमसुताः प्रोक्ता नव ब्रह्मर्षिपत्नयः BHĀG. P. 4, 1, 12. संज्ञतः पशुरिति प्रोक्ते wenn angezeigt ist KĀTJ. ÇR. 6, 3, 23. Jmd verrathen: यो मा प्रोवाचः TS. 2, 6, 6, 1. 3, 5, 2, 1. — 2) überweisen, überantworten: मा नो अग्ने दुर्भृतये प्र वाचः RV. 7, 1, 22. प्र णः पूर्वस्मै सुवितार्थं वाचत 8, 27, 10. विशं राज्ञे PAÑĀV. Br. 21, 1, 1. तेभ्यो ह पृथगावसथान्प्रोवाच ÇAT. Br. 10, 6, 1, 2. — 3) sagen, sprechen MBH. 2, 503. 5, 7487. KĀTHĀS. 3, 48. PAÑĀT. 4, 14. 77, 1. 96, 25. अतः प्रोच्यते impers. 49, 5. समुद् इत्येव प्रो-